SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-3, खण्ड-3, जुलाई - सितम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन

गुंजन सक्सेना

सहायक प्राध्यापक (इतिहास)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों और घरेलू जिम्मेदारियों को तोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे विभिन्न रूपों में, जैसे कि प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में भाग लेना, गुप्त सूचनाएं देना, रसद समर्थन प्रदान करना, और क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना आदि में योगदान देती थीं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का अदम्य साहस और अटूट समर्पण राष्ट्र के इतिहास का अभिन्न अंग है। उत्पीड़न को चुनौती देने, परिवर्तन की वकालत करने और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने के उनके दृढ़ संकल्प ने एक अमिट विरासत छोड़ी है। जब हम उनकी अमूल्य भूमिका पर विचार करते हैं, तो हमें भारत के भाग्य को आकार देने और प्रगति एवं समानता की ओर निरंतर यात्रा में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका का स्मरण होता है। स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच", भारत की महिलाएं परिवर्तन की मूक वास्तुकार थीं, जिन्होंने अपने लचीलेपन, बलिदान और अदम्य भावना से एक स्वतंत्र राष्ट्र की नींव रखी।"

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान को शामिल किए बिना स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास ही अधूरा हो जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं द्वारा दिये गये बलिदान का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी बहादुरी, निःस्वार्थ सेवा एवं बलिदान अतुलनीय है। हम लोगों में से बहुत से लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि बहुत सारी महिलाओं ने पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी। महिलाओं ने अपने आत्मिक बल तथा पूरे

साहस से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए महिलाओं ने बहुत सी प्राचीन परम्पराओं को तोड़ा तथा अपनी परम्परागत घरेलू जिम्मेदारियों को भी छोड़ा। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका योगदान सराहनीय एवं वन्दनीय है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए यह बहुत आसान नहीं था कि वे एक बहादुर की तरह सियासत की लड़ाई लड़ें। लेकिन उन्होंने लोगों के इस मिथ को तोड़ दिया कि महिलाएं केवल घरेलू कार्य करने के लिए होती है। अधिकांश महिलाओं ने आन्दोलन में अपनी प्राणों की आहुति भी दी. उनमें से एक रानी लक्ष्मीबाई का नाम बड़े आदर से लिया जाता है क्योंकि वे अंग्रेजों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई, वीरगति को प्राप्त होने से पहले उन्होंने अंग्रेजो की दाँत खट्टे कर दिए। ऐसी ही स्वतंत्रता के आन्दोलन में सम्मिलित महिलाओं को यह शोध पत्र समर्पित है। भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। महिलाएं दबी कुचली थी. इसका मुख्य कारण था पुरुष प्रधान समाज का होना। समाज में यह मान्यता प्रचलित थी कि महिलाओं का प्रमुख दायित्व घरेलू काम काज सम्भालना है इसलिए उन्हें अन्य कियायों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यहां तक कि पुरुषों के बीच उनको अपने विचार रखने की भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। पुरुषों के फैसले महिलाओं पर थोप दिए जाते थे। जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, विधवाओं को पुर्नविवाह करने की अनुमति न देना, लड़कियों की भ्रूण हत्या आदि बहुत आम बात थी। ईस्ट इण्डिया के शासन के दौरान कई समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर तथा ज्योतिबा फूले इत्यादि ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए बहुत संघर्ष किया, इस काल में बहुत सी महिलाएं मार्सल आर्ट में पारंगत की गयी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सन् 1817 में महिलाओं का प्रवेश हो गया रानी लक्ष्मीबाई, भीमाबाई होल्कर, मैडम भीकाजी कामा आदि ने अंग्रेजों की विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनकारियों में महिलाओं की एक लम्बी श्रृंखला है।

शोध उददेश्य

1. सामान्य रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के बारे में अध्ययन करना।

2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महिलाओं के योगदान का वर्णन करना।
3. विभिन्न महिला स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलनकारियों के बारे में जानकारी देना।
4. भारतीय महिलाओं के आर्थिक तथा समाजिक स्थिति का वर्णन करना।
5. महिलाओं के बलिदान और कार्यों को जानना।

शोध विधि

शोध पत्र लिखने के लिए विभिन्न पुस्तकों राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित लेखों का अध्ययन किया गया। कह सकते है कि शोध पत्र लिखने के लिए सेकेण्डरी डाटा का प्रयोग किया गया।

शोध विस्तार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में पुरुषों के साथ बहुत सारी महिलाओं ने भी भाग लिया। यदि हम महिला नेताओं की सूची बनाएं तो एक लम्बी सूची बनती है। सरोजनी नायडू रानी लक्ष्मीबाई, विजय लक्ष्मी पंडित, कमला देवी चटोपध्याय तथा मृदुला साराबाई, राष्ट्रीय स्तर की महिला नेता है। राज्य स्तर के महिला नेताओं में दूर्गाबाई देशमुख मद्रास से, रामेश्वरी नेहरू उत्तर प्रदेश से सत्यावती देवी तथा सुभद्राजोशी दिल्ली से, हन्सा मेहता तथा उषा मेहता बाम्बे से इत्यादि। यद्यपि की इस तरह का बंटवारा करना बहुत दूरूह कार्य है कि कौन क्षेत्रीय स्तर की नेता है और कौन राष्ट्रीय स्तर की नेतृ हैं। क्योंकि कई नेताओं ने क्षेत्रीय स्तर पर कार्य प्रारम्भ किया और राष्ट्रीय स्तर तक गयी। भारतीय महिलाओं के साथ कुछ आयरलैण्ड की महिलाओं जैसे एनी वेसेन्ट तथा मार्गरेट का नाम लिया जाता है। जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अंग्रेजो के विरूद्ध लड़ीं तथा अंग्रेजो के शोषण के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रतिभाग करने वाली कुछ प्रमुख महिलाओं की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

(1) सरोजनी नायडू:- 1917 के आस-पास के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। 1925 में यह कांग्रेस की दूसरी महिला अध्यक्ष बनी। बंगाल विभाजन के समय 1905 में इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में प्रथम बार भाग लिया। दर्शना में नमक सत्याग्रह आन्दोलन में ये एकलौती महिला सत्याग्रही थी। इन्होंने इस सत्याग्रह को नेतृत्व प्रदान किया। इसके लिए उन्हें जेल भेजा गया था। 1942 में अंग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन के समय भी गिरफ्तार किया गया। इन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया और महिला सशक्तिकरण एवं राष्ट्रीयता जागृत करने के लिए जगह जगह व्याख्यान दिया। भारतीय महिला संगठन बनाने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए एक डेलीगेशन के साथ लन्दन भी गयी।

(2) रानी लक्ष्मीबाई:- भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई जैसा बहादुर और शक्तिशाली योद्धा का अन्य कोई उदाहारण नहीं मिलता। वे देश भक्ति और राष्ट्रीय गौरव की जीती जागती मिसाल है। यह बहुत से लोगों के लिए प्रेरणा की स्रोत है। उनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

(3) कमलादेवी चटोपाध्यायः-1930 में इन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। इन्होंने हैन्डीकाफ्ट, हैण्डलूम और थीयेटर के विकास के लिए काम किया। भारतीय सरकार ने इन्हें 1955 में पद्म विभूषण से अलंकृत किया।

(4) एनी वेसेन्टः-1917 में ये काग्रेस की प्रथम अध्यक्षा बनी, इनकी साथी मार्गरेट ने महिला मताधिकार का बिल तैयार किया और भारत महिला संगठन की भी स्थापना की।

(5) विजयलक्ष्मी पंडितः- श्रीमती पंडित अपने राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यों के कारण 1932, 1940 तथा 1942 में तीन बार जेल गयी। नमक सत्याग्रह के समय इन्होंने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया इन्होंने विदेशी शराब और कपड़ो को छोड़ने के लिए कई जुलूस निकाला इनके साथ इनकी छोटी बच्ची और बहन भी थी। इन्होंने बहुत सारी लड़ाईयां लड़ी और महिलाओं के लिए बहुत सी बाधाओं को भी दूर किया।

(6) दुर्गावाई देशमुखः- नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए इनको तीन साल के लिए जेल में डाल दिया गया। उस समय दक्षिण के प्रसिद्ध आन्दोलनकारी राजाजी और टी० प्रकाशन

जब आन्दोलन के दूसरे कार्यों में व्यस्त थे तब दुर्गाबाई देशमुख ने एक समुह को नेतृत्व प्रदान करते हुए मद्रास के मैरिन बिच पर सत्याग्रह किया। बहुत छोटी उम्र में इन्होंने आन्ध्र महिला सभा तथा हिन्दी बालिका पाठशाला नामक संस्थाओं का गठन कर दिया।

(7) मृदुला सारावाई:- बँटवारे के समय इन्होंने शरणार्थियों तथा भीड़ द्वारा अपहृत बालिकाओं को बचाने के लिए हिन्दू मुस्लिम सबसे संघर्ष किया। 1934 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गुजरात के डेलीगेशन में इनका चुनाव हुआ।

(8) वसन्तीदासः-ब्रिटिश राज के समय ये एक सकिय आन्दोलकारी थी। इन्होंने बहुत सारे राजनीतिक तथा समाजिक आन्दोलनों में प्रतिभाग किया। स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में ये सक्रिया भाग लेती थी और ये असहयोग आन्दोलन के समय गिरफ्तार भी हुई। 1973 में भारत सरकार ने इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित भी किया।

(9) सुचेता कृपलानीः-1937 में इन्होंने सामाजिक जीवन में प्रवेश किया और 1939 में राजनीतिक जीवन में प्रवेश करते हुए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस में शामिल हुई। 1940 में इन्होंने फैजाबाद में सत्याग्रह किया और इनको दो वर्ष के लिए जेल में डाल दिया गया। भारत छोडो आन्दोलन के समय ये भूमिगत रह कर चुपचाप अंग्रेजो के विरूद्ध आन्दोलन में अपना योगदान देती रहीं।

(10) कमलादास गुप्ताः- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन भाग लेने वाली महिलाओं में यह एक सुयोग्य एवं तेज तर्रार महिला थी। ये जंगतार पार्टी की एक सक्रिय सदस्य थी। भारत छोड़ो आन्दोलन से सम्बन्ध होने के कारण इनको 1942 में गिरफ्तार करके प्रेसीडेन्सी जेल में डाल दिया गया।

(11) इन्दिरा गाँधीः आधुनिक भारत को एक प्रसिद्ध महिला है। 1938 में ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनी। इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और 1947 में आजादी मिलने के बाद प्रधानमंत्री के घर के संचालन का बोझ इन पर था। साथ ही बिना थके ये आल्पसंख्यको की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करती रहीं। साम्यवाद के विरूद्ध इन्होंने जबरदस्त लड़ाई लड़ी।

अंक-3, खण्ड-3, जुलाई - सितम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

गाँधी के समय महिलाओं का आन्दोलन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी भारतीय संस्कृति की जीते जागते मसाल थे। देश के लोग सम्मान से उन्हें महात्मा कहते हैं। वे एक समाज सुधारक अर्थशास्त्री, राजनेता, दार्शनिक एवं सत्य के पुजारी थे, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को देश की आम जनता से जोड़ा। स्वतंत्रता आन्दोलन को जन-जन का आन्दोलन बना दिया। उन्होंने लोगो को अन्याय के विरूद्ध लड़ना सिखाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महात्मा गाँधी के योगदान को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। उस समय भारत की स्वतंत्रता के लिए हो रहे आन्दोलनों को उन्होंने अकेले ही नेतृत्व प्रदान किया। अंग्रेजों के विरूद्ध शांति और अहिंसा से आन्दोलन को आगे बढ़ाया यह उनकी मुख्य तकनीक थी। 1918 से 1922 के मध्य गाँधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए कई सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन का उद्देश्य असहयोग के द्वारा ब्रिटिश सरकार को कमजोर करना था। गाँधी जी कहा करते थे कि पूर्ण स्वराज तब तक नहीं माना जायेगा जब तक महिलाएं पुरूष की बराबरी में खड़ी न हो। महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में अपनी शक्ति का एहसास होना चाहिए। गाँधी जी ने महिलाओं को जातिवाद के विरुद्ध बाल विवाह के विरूद्ध लडने के लिए प्रोत्साहित किया। महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया। महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। असहयोग आन्दोलन में शिक्षित अनेक महिलओं जैसे अरूणा आसफ अली, सरला देवी तथा मुत्थू लक्ष्मी आदि ने भाग लिया। गाँधी जी के गिरफ्तार होने के बाद सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सरोजनी नायडू ने गाँधी से प्रभावित होकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। महिला मताधिकार के लिए लड़ाई लड़ी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम अध्यक्ष चुनी गयी। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय उषा मेहता, अरूना आसफ अली जैसे कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। 1920 में अधिकांश महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में प्रतिभाग किया। इस समय बहुत सारी महिला कार्यकर्ता आगे आयी। उस समय भारतीय महिलाओं ने सामाजिक आर्थिक सभी प्रकार के बन्धनों को दूर कर दिया भारत की स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की बहादुरी, बलिदान और राजनीतिक कुशलता की अनगिनत कहानियाँ दर्ज हैं। उनका साहस असाधारण था, क्योंकि वे सक्रिय क्रांतिकारी बनीं, गुप्त समूह स्थापित किए, ब्रिटिशविरोधी साहित्य प्रकाशित किया और कठोर - कारावास और यातनाएँ सहन कीं। ये महिलाएँ केवल अनुयायी नहीं थीं, बल्कि अपने आप में एक प्रमुख खिलाड़ी थीं। ढ़ियों से मुक्त होकर वीं सदी में भारतीय महिलाओं ने सामाजिक रू19 भेदभावपूर्ण प्रथाओं को चुनौती दी। शुरुआती सुधारक और कार्यकर्ता उभरे, जिन्होंने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह की समाप्ति और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार की वकालत की। राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और ज्योतिराव फुले जैसे दूरदर्शी लोगों ने इस अभियान का नेतृत्व किया, यह समझते हुए कि महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय विकास, दोनों के लिए आवश्यक है असहयोग आंदोलन ने महिलाओं को आगे आने, आत्मविश्वास हासिल करने और अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने का मंच प्रदान किया। इसने कुछ क्षेत्रों में पर्दा प्रथा और बाल विवाह उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों को भी जन्म दिया।

महिलाओं ने प्रतिरोध के प्रतीकात्मक कार्यों में भाग लिया, जैसे ब्रिटिश कपड़े जलाना और विदेशी निर्मित वस्तुओं की होली जलाना, जिससे ब्रिटिश शासन के खिलाफ अवज्ञा का एक शक्तिशाली संदेश गया। असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं को गिरफ्तारी, कारावास और पुलिस की बर्बरता सहित कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन चुनौतियों के बावजूद, वे स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर अडिग रहीं।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: हम यह कह सकते है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर जब दृष्टिपात करते है तो पता चलता है कि महिलाओं ने सड़क से जेल तक जेल से लेकर विधायिका तक किस प्रकार साहस के साथ आन्दोलन किया और बहुत सारे संघर्ष में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में हजारों

महिलाओं ने अपनी प्राणाहुति दी, यदि यह कहा जाय कि केवल अहिंसात्मक आन्दोलन से आजादी नहीं मिली बल्कि महिलाओं के सक्रिय योगदान और बलिदान के चलते आजादी मिली तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। विश्व के इतिहास में शायद पहली बार ऐसा हुआ कि एक ऐसा शासन जिसके राज्य में कभी सुर्यास्त नहीं होता था ऐसे महाबली शासक को शांति और अहिंसा से चुनौती देकर आजादी ली गयी। अन्त में यही कह सकते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल एम०जी०/भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी/ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली 2008.
2. राजन, कृष्णन/भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाएं/राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत.
3. चंद्रशेखर, ममता/ 75 महिला स्वतन्त्रता सेनानी/प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2023.
4. गुप्त, विश्वप्रकाश एवं गुप्त, मोहनी/ स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं/नमन प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सिंह, मीनाक्षी/ स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं/ महेंद्र बुक कम्पनी

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR